

पाठ—33 अभिमन्यु

अर्जुन और संशप्तकों के बीच घोर संग्राम को छिड़ा हुआ देखकर द्रोणाचार्य ने युद्ध के तेरहवें दिन चक्रव्यूह की रचना कर युधिष्ठिर पर धावा बोल दिया ।

सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु और अर्जुन के अलावा चक्रव्यूह में युद्ध करना कोई नहीं जानता था ।

दक्षिण में अर्जुन को जाया हुआ जानकर युधिष्ठिर ने वीर बालक अभिमन्यु से आग्रह किया कि द्रोण द्वारा रचे हुए व्यूह को तोड़ना सिर्फ तुम्हारे लिए ही संभव है अतः तुम इस कार्य को प्रारंभ करो ।

युधिष्ठिर की इस बात का पांडु पक्ष के अन्य वीरों ने भी समर्थन किया ।

वीरता और पराक्रम से भरा हुआ अभिमन्यु व्यूह के अंदर प्रवेश तो पा गया लेकिन उसे बाहर निकलना नहीं आता था और पांडु पक्ष से और कोई जयद्रथ की कुशलता के कारण प्रवेश नहीं कर पाया था ।

दुर्योधन,द्रोण,अश्वत्थामा कृतवर्मा आदि छह
महारथियों ने अभिमन्यु को चारों ओर से घेर लिया ।

अभिमन्यु ने टूटे हुए रथ का पहिया हाथ में उठा
लिया और उसे घुमाकर उससे युद्ध करने लगा ।

अंततः अभिमन्यु कईयों से अकेला लड़ते हुए थक
चुका था और गदा की मार पड़ते ही उसके प्राण
पखेरू उड़ गए ।

अर्जुन ने यह सुनते ही कि अभिमन्यु नहीं रहा;
यह प्रण ले लिया कि कल सूर्यास्त से पूर्व ही मैं
जयद्रथ का वध कर दूँगा।

जयद्रथ ने भी अर्जुन की प्रतिज्ञा सुनते ही दुर्योधन
से युद्ध में भाग न लेने की इच्छा प्रकट की।

दुर्योधन ने जयद्रथ का हौंसला बढ़ाते हुआ कहा
कि सभी तुम्हारे साथ कल के युद्ध में रहेंगे।